SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के सुदूर क्षेत्रों की जनजातीय समस्या एवं समाधान में परिवहन की भूमिका: एक भौगोलिक अध्ययन

विवेकानन्द प्रसाद, शोधार्थी, **सरोज कुमार सिंह,** पीएच–डी, शोध निदेशक, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
विवेकानन्द प्रसाद, शोधार्थी
सरोज कुमार सिंह, पीएच–डी,
E-mail : vivek825311@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/05/2026
Revised on : 06/07/2026
Accepted on : 15/07/2026
Overall Similarity : 00% on 07/07/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Jul 7, 2026 (07:34 AM)
Matches: 0 / 3750 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र झारखंड के उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के सुदूर ग्रामीण एवं पर्वतीय अंचलों में निवास करने वाले जनजातीय समुदायों (विशेषकर संथाल, मुंडा, उरांव और आदिम जनजाति बिरहोर) की सामाजिक–आर्थिक समस्याओं का एक भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जांचना है कि किस प्रकार सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भौगोलिक अलगाव और परिवहन तंत्र का अभाव आदिवासियों के पिछड़ेपन का मूल कारण बना हुआ है। इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए प्राथमिक सर्वेक्षण और द्वितीयक आंकड़ों का सहारा लिया गया है। स्थानिक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मुख्य सड़क मार्गों से दूरी बढ़ने के साथ–साथ जनजातीय क्षेत्रों में दूरी–प्रभाव मॉडल के तहत स्वास्थ्य, उच्च शिक्षा और आधुनिक बाजारों तक पहुंच का स्तर अत्यंत निम्न है। सुदूर वनों और पर्वतीय ढालों पर बसे टोलों में बारहमासी सड़कों और सार्वजनिक परिवहन के अभाव के कारण संस्थागत प्रसव की कमी, प्राथमिक स्तर के बाद बालिकाओं का उच्च ड्रॉप–आउट रेट और बिचौलियों द्वारा लघु वन उपज का आर्थिक शोषण जैसी गंभीर समस्याएं पाई गई हैं। इस शोध से यह निष्कर्ष निकालता है कि परिवहन बुनियादी ढांचा, केवल एक भौतिक संपर्क मार्ग नहीं है, बल्कि जनजातीय सशक्तिकरण का एक अनिवार्य उत्प्रेरक भी है। अतः समाधान के रूप में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के प्रभावी क्रियान्वयन, दुर्गम क्षेत्रों के लिए विशेष लघु–सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था, और सुदूरवर्ती क्षेत्रों की जीआईएस मैपिंग के साथ–साथ आपातकालीन चिकित्सा हेतु ड्रोन तकनीक जैसी आधुनिक भौगोलिक प्रणालियों के समावेशन की पुरजोर अनुशंसा की जाती है, ताकि इन क्षेत्रों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।

मुख्य शब्द

उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल, जनजातीय समस्याएं, परिवहन भूगोल, भौगोलिक अलगाव, दूरी–प्रभाव मॉडल, बिरहोर.

परिचय

जनजाति एक मुख्य रूप से ऐसे मानव समुदाय को कहा जाता है जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करते हैं जिनकी एक विशिष्ट, भाषा, रीति–रिवाज और सामाजिक ढांचा होता है यह समुदाय आधुनिक सभ्यता की चकाचौंध से दूर प्रकृति की करीब जंगल, जल और जमीन पर निर्भर जीवन व्यतीत करते हैं। इन्हें आदिवासी भी कहा जाता है क्योंकि इनका वास पहले से ही रहता है। भारतीय संविधान में इन्हें अनुसूचित जनजाति के रूप में अधिसूचित किया गया है।

लोकुर समिति (1965) द्वारा अनुसूचित जनजाति के रूप में पहचानने के 5 आधार दिए गए हैं:

- **आदिम लक्षण**: उस समुदाय की जीवनशैली, खान–पान, और आर्थिक क्रियाएं पारंपरिक व आदिम होनी चाहिए।
- **विशिष्ट संस्कृति**: उनकी भाषा, रहन–सहन, त्योहार, और धार्मिक मान्यताएं आम समाज से बिल्कुल अलग होनी चाहिए।
- **भौगोलिक अलगाव**: वे समुदाय मुख्यधारा के इलाकों से दूर, दुर्गम जंगलों या पहाड़ों में निवास करने वाले होने चाहिए।
- **बड़े समुदाय से संपर्क में संकोच**: बाहरी या आधुनिक दुनिया के लोगों के साथ घुलने–मिलने में झिझक या संकोच का भाव होना।
- **सामाजिक–आर्थिक पिछड़ापन**: शिक्षा, अर्थव्यवस्था, और स्वास्थ्य के मामले में समुदाय का काफी पिछड़ा होना।

झारखंड के उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल में संथाल, मुंडा और उरांव जनजातियों का मूल निवास है इसके अलावे बिरहोर जनजाति भी निवास करती है जिसमें संथाल जनजाति का बसाव गिरिडीह, धनबाद, बोकारो और चतरा में पाई जाती है, उरांव जनजाति हजारीबाग, रामगढ़ और बोकारो जिलों में निवास करती है तथा मुंडा जनजाति का बसाव हजारीबाग, गिरिडीह और बोकारो में पाई जाती है, इसके अलावा बिरहोर जनजाति चतरा हजारीबाग तथा गिरिडीह में निवास करती है।

परिवहन किसी भी क्षेत्र के विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है जैसे हमारे शरीर में धामनियां एवं शिराएं सारे शरीर के अंगों को विकसित एवं पुष्ट बनाती है, वैसे ही परिवहन किसी क्षेत्र को गतिशील एवं विकासशील बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जहां तक उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल में परिवहन की बात की जाए तो यहां परिवहन का विकास तो हुआ है परंतु अभी भी उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के सुदूर जनजातीय क्षेत्रों में परिवहन की सुविधाओं की कमी केवल आवागमन की समस्या नहीं है, बल्कि यह सीधे तौर पर गरीबी, कुपोषण, शिक्षा की कमी, बेरोजगारी और स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव को जन्म देती है। यह शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे परिवहन का अभाव समस्याओं को बढ़ाता है और परिवहन कैसे इसका समाधान का मार्ग प्रस्तुत कर सकता है।

शोध के उद्देश्य

- उत्तरी छोटानागपुर क्षेत्र की प्रमुख जनजातियों और उनके भौगोलिक बसाव को रेखांकित करना।
- परिवहन के अभाव के कारण आदिवासियों को होने वाली प्रमुख समस्याओं की पहचान करना।
- जनजातीय विकास और क्षेत्रीय संतुलन स्थापित करने में परिवहन की भूमिका का मूल्यांकन करना और व्यावहारिक नीतिगत सुझाव देना।

विधितंत्र: इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है:

- **प्राथमिक विधि**: प्रमंडल के सुदूरवर्ती जिलों जैसे चतरा हजारीबाग के आंतरिक ब्लॉक गिरिडीह के पीरटाँड़ क्षेत्र के कुछ चुनिंदा गांव का क्षेत्रीय सर्वेक्षण और स्थानीय जनजातीय समुदायों से साक्षात्कार किया गया।
- **द्वितीयक आंकड़े**: जनगणना रिपोर्ट 2011 झारखंड सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण, सड़क निर्माण विभाग के आंकड़े और ट्राईबल वेलफेयर रिसर्च इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट।

अध्ययन क्षेत्र

उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल झारखंड राज्य के पांच प्रमंडल में से सबसे बड़ा प्रमंडल है। इसका नामकरण छोटानागपुर पठार के उत्तरी हिस्सा में होने के कारण इस भूभाग का नाम उत्तरी छोटानागपुर पड़ा जो दक्षिणी छोटानागपुर से भौगोलिक रूप में दामोदर नदी घाटी से अलग होती है परंतु प्रशासनिक दृष्टि से दामोदर घाटी क्षेत्र को उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल में शामिल

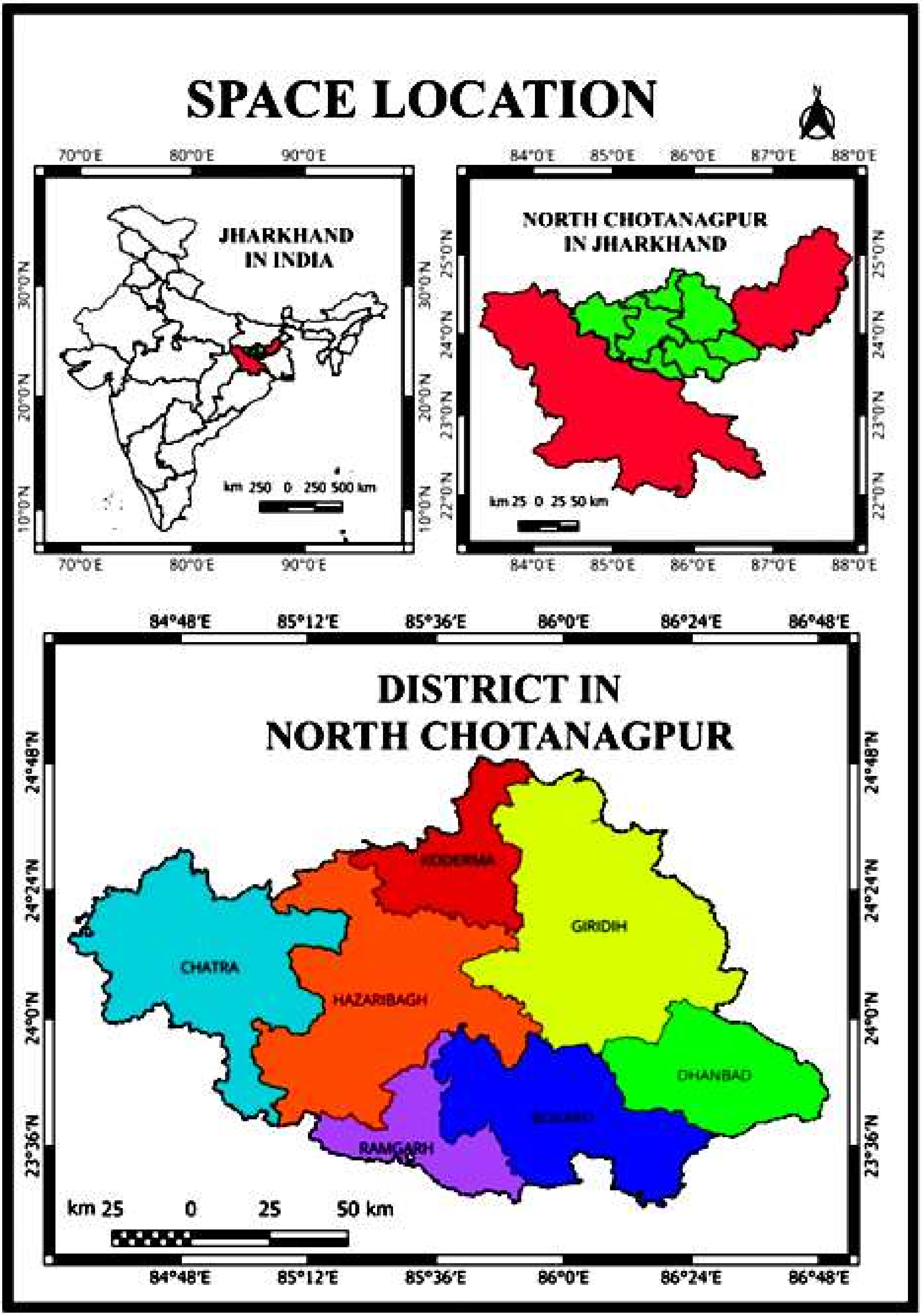
SPACE LOCATION
JHARKHAND
IN INDIA
70°0'E
80°0'E
90°0'E
10°0'N
20°0'N
30°0'N
km 250 0 250 500 km
NORTH CHOTANAGPUR
IN JHARKHAND
84°0'E
85°0'E
86°0'E
87°0'E
88°0'E
22°0'N
23°0'N
24°0'N
25°0'N
km 25 0 25 50 km
DISTRICT IN
NORTH CHOTANAGPUR
84°48'E
85°12'E
85°36'E
86°0'E
86°24'E
86°48'E
24°48'N
24°24'N
24°0'N
23°36'N
CHATRA
HAZARIBAGH
GIRIDIH
DHANBAD
RAMGARH
km 25 0 25 50 km

किया गया है। इस प्रमंडल के उत्तर में बिहार राज्य, पूर्व में संथाल परगना प्रमंडल तथा पश्चिम बंगाल राज्य, पश्चिम में पलामू प्रमंडल तथा दक्षिण में दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडलों के साथ सीमाएं है। इसका अक्षांशीय विस्तार 23°26′ उत्तरी अक्षांश से 24°49′ उत्तरी अक्षांश तथा 84°26′41″ पूर्वी देशांतर से 86°50′ पूर्वी देशांतर के मध्य में 20154 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है।

उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल में जनजातीय समुदाय की वर्तमान स्थिति

उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल में राज्य के अन्य प्रमंडलों की तुलना में जनजाति आबादी का प्रतिशत कम है लेकिन संख्यात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जनजातियों का बसाव मुख्य रूप से वनों की संघनता और औद्योगिक विस्थापन से प्रभावित रहा है। चतरा प्रमुख जनजातीय क्षेत्रों में से एक है जहां वन क्षेत्र अधिक है। गिरिडीह का पीरटाँड़ और डुमरी प्रखंड भी जनजातीय स्वरूप से सघन है हजारीबाग, बोकारो एवं रामगढ़ में मध्यम सघनता वाला जनजातीय क्षेत्र हैं जहां ग्रामीण इलाकों में संथाल और मुंडा जनजातियां निवास करती है। वही धनबाद और कोडरमा तीव्र औद्योगिकीकरण, कोयला खनन (Jharia Coalfields) और शहरीकरण के कारण धनबाद में जनजातीय आबादी का अनुपात काफी कम (लगभग 8.4 प्रतिशत) हो गया हैं।

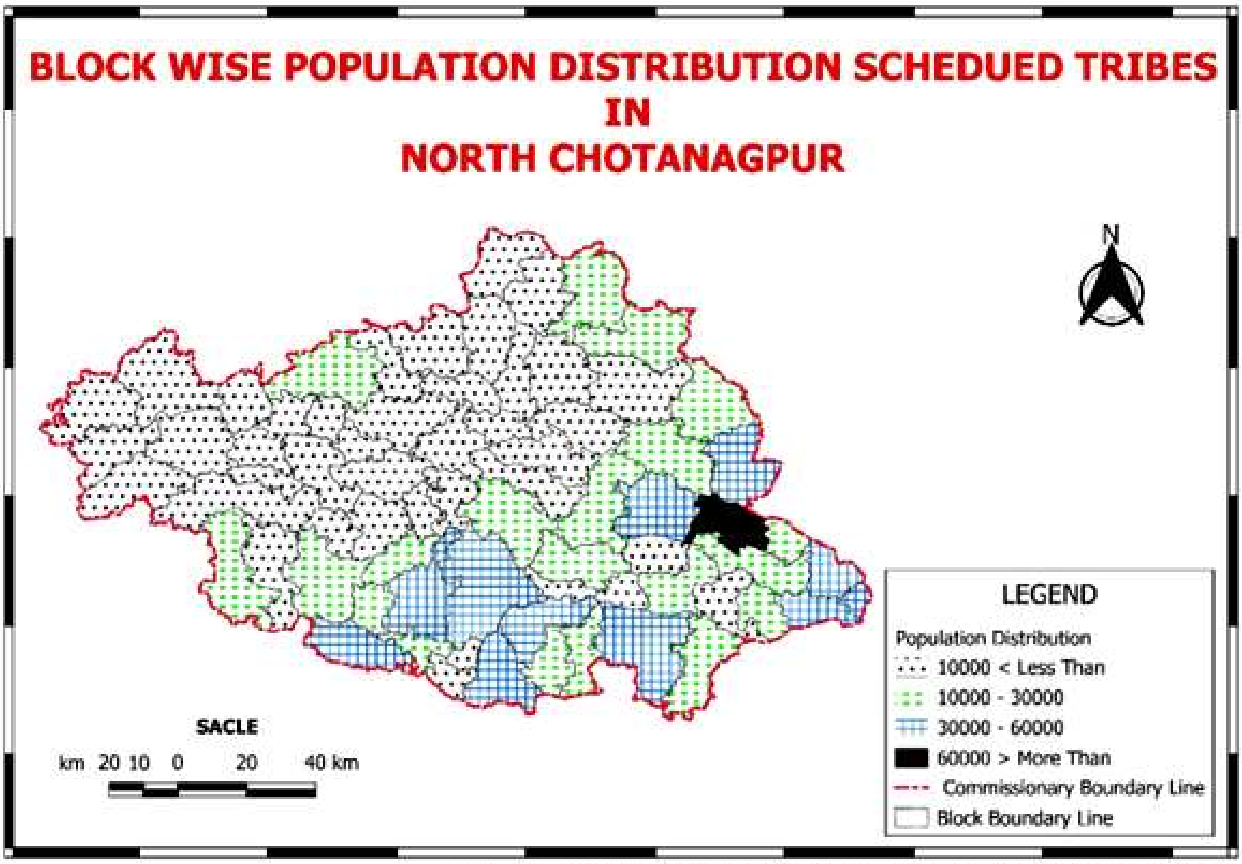

Source : Census of India 2011& Survey of India , Prepared and Modify by Research Scholar on QGIS Software

ST जनसंख्या वितरण जिलावार

जिला	कुल जनसंख्या	कुल प्रतिशत	पुरूष जनसंख्या	पुरूष प्रतिशत	महिला जनसंख्या	महिला प्रतिशत
बोकारो	255626	12.40	129233	12.05	126393	12.77
धनबाद	233119	08.68	117256	08.34	115863	09.06
गिरीडीह	230188	09.74	120646	09.59	117542	09.90
रामगढ़	201166	21.19	101901	20.62	099265	21.81
हजारीबाग	121768	07.02	060796	06.82	060972	07.23
चतरा	045563	04.37	023141	04.33	022422	04.41
कोडरमा	06903	00.96	03594	00.98	003309	00.95

*(**Source:** District Census Handbook 2011)*

जनजातीय समुदाय की वर्तमान स्थिति

आज भी इस प्रमंडल के सुदूर गांवों (जैसे चतरा के कौलेश्वरी पहाड़ के आस–पास या गिरिडीह के पारसनाथ पहाड़ी के सुदूरवर्ती गांवों) में रहने वाले आदिवासियों का जीवन पारंपरिक ढांचे पर चल रहा है।

आजीविका स्थिति

- **वर्षा आधारित कृषि**: सुदूर क्षेत्रों में कृषि आज भी पूर्णतः मानसून पर निर्भर है। पठारी ढालों के कारण यहाँ मुख्य रूप से ''एक–फसली'' (Mono-cropping) कृषि होती है, जिसमें ''धान'' (Rice) मुख्य फसल है।
- **मोटे अनाजों की खेती**: चतरा और गिरिडीह के पहाड़ी ढालों पर मडुआ (रागी), गोंदली और कुर्थी जैसे पारंपरिक मोटे अनाजों की खेती की जाती है, जो खाद्य सुरक्षा का मुख्य आधार हैं।
- **वन उपज संग्रहण**: सुदूर वनों (विशेषकर चतरा और कोडरमा) में रहने वाले आदिवासी आजीविका के लिए महुआ, केंदू पत्ता, चिरौंजी, साल के बीज और शहद के संग्रहण पर निर्भर हैं। बिरहोर जनजाति मुख्य रूप से ''चोप'' (एक प्रकार की जंगली लता) से रस्सी बनाने का पारंपरिक कार्य करती है।
- **खनन और औद्योगिक मजदूरी**: बोकारो, धनबाद और रामगढ़ जैसे ''कोयला बेल्ट'' में बड़े पैमाने पर हुए भूमि विस्थापन के कारण पारंपरिक कृषक अब असंगठित खदान मजदूर (Coal Miners) या निर्माण कार्यों में दिहाड़ी मजदूर के रूप में जीविकोपार्जन कर रहे हैं।

विखंडन और भूमि विस्थापन के कारण आदिवासियों के पास कृषि जोत (Land Holdings) का आकार अत्यंत छोटा (सीमांत) रह गया है। सिंचाई के साधनों (नहर, नलकूप) का अभाव यहाँ की कृषि भूगोल की प्रमुख विशेषता है।

शैक्षणिक स्थिति

- **साक्षरता दर में क्षेत्रीय विषमता**: प्रमंडल के शहरी और अर्ध–शहरी क्षेत्रों के समीप रहने वाली जनजातियों में शिक्षा का स्तर बेहतर हुआ है, लेकिन अति सुदूर क्षेत्रों में यह स्थिति चिंताजनक है।
- **उच्च ड्रॉप–आउट दर**: प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा (संथाली, मुंडारी) में शिक्षा के अभाव और सुदूर क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालयों की अत्यधिक दूरी के कारण कक्षा 8 के बाद विशेष रूप से बालिकाओं की ड्रॉप–आउट दर काफी अधिक है।
- **सकारात्मक प्रयास**: एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (EMRS) और कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (KGBV) के माध्यम से शिक्षा के स्तर में सुधार देखा जा रहा है।

ST जनसंख्या साक्षरता एवं निरक्षर जिलावार

जिला	कुल साक्षर जनसंख्या	पुरूष साक्षरता	महिला साक्षरता	कुल निरक्षर जनसंख्या	पुरूष निरक्षर	महिला निरक्षर
बोकारो	121567	74327	47240	134059	54906	79153
धनबाद	110672	68726	41946	122447	48530	73917
रामगढ़	102867	61278	41589	098299	04623	57676
गिरीडीह	087612	56361	31251	150576	64285	86291
हजारीबाग	059329	34512	24817	062439	26284	36155
चतरा	021103	12307	08796	024460	10834	13626
कोडरमा	002103	01391	00714	004798	02203	02595

*(**Source:** District Census Handbook 2011)*

स्वास्थ्य स्थिति

- **कुपोषण और एनीमिया**: भौगोलिक दुर्गमता के कारण संतुलित आहार और शुद्ध पेयजल की अनुपलब्धता जनजातीय महिलाओं और बच्चों में गंभीर कुपोषण और एनीमिया का कारण बनती है।
- **भौगोलिक दूरी और स्वास्थ्य ह्रास**: मुख्य पक्की सड़कों से सुदूर टोलों की अत्यधिक भौतिक दूरी के कारण आपातकालीन स्थितियों में एम्बुलेंस (108 सेवा) समय पर नहीं पहुंच पाती। इसके कारण आज भी कई गांवों में संस्थागत प्रसव (Institutional Delivery) का प्रतिशत कम है।

- **पारंपरिक बनाम आधुनिक चिकित्सा:** आदिवासियों में आज भी जड़ी–बूटी आधारित पारंपरिक चिकित्सा और ओझा–गुणी व्यवस्था के प्रति झुकाव देखा जाता है, जिसका मुख्य कारण आधुनिक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (PHCs) का अभाव या दूरी है।
- **सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति:** शिक्षा के प्रसार के बावजूद साक्षरता दर राज्य के औसत से कम है, विशेषकर महिलाओं में। बिरहोर जैसी विलुप्तप्राय जनजातियां आज भी आधुनिक जीवन से कटी हुई हैं।
- **प्रकृति–केंद्रित जीवन:** यहाँ की जनजातियों की पूरी संस्कृति प्रकृति पूजा पर आधारित है। सरहुल (साल वृक्ष की पूजा), करमा (करम वृक्ष की पूजा), और सोहराय (पशु धन की पूजा) इनके प्रमुख त्योहार हैं।
- **समतावादी समाज:** जनजातीय समाज में जातिगत ऊंच–नीच का पदानुक्रम नहीं होता। महिलाओं की स्थिति सामाजिक और आर्थिक निर्णयों में पुरुषों के समान ही सुदृढ़ होती है।
- **पारंपरिक स्वशासन व्यवस्था:** उत्तरी छोटानागपुर के जनजातीय गांवों में आज भी पारंपरिक राजनीतिक संगठन जीवित हैं, जैसे मुंडाओं की ''पढ़ा राजा व्यवस्था'' और संथालों की ''माझी थान/परगना व्यवस्था'', जो स्थानीय विवादों का निपटारा करती है।

दूरी–प्रभाव मॉडल

भौगोलिक दृष्टिकोण से, सुदूर क्षेत्रों में एक सिद्धांत काम करता है: ''सड़क मार्ग या परिवहन केंद्र से दूरी जितनी बढ़ती है, आधुनिक सुविधाओं (स्वास्थ्य, शिक्षा) का लाभ उतना ही घटता जाता है।''

मुख्य सड़क केंद्र से दूरी	स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर प्रभाव	आदिवासियों की आर्थिक स्थिति
0–2 किमी.	उच्च (एम्बुलेंस और स्कूल बस की सुलभ पहुंच)	बेहतर (सीधे बाजार में वन उपज की बिक्री)
2–5 किमी.	मध्यम (पैदल या साइकिल पर निर्भरता)	सामान्य (स्थानीय छोटे बिचौलियों पर निर्भरता)
5 किमी. से अधिक	नगण्य (खटिया पर मरीज को ले जाना, उच्च ड्रॉप–आउट)	अत्यंत दयनीय (महाजनी शोषण और वस्तु–विनिमय जैसी स्थिति)

इस प्रमंडल को दूरी के आधार पर तीन भौगोलिक पेटियों (Spatial Zones) में विभाजित करके इस मॉडल को समझा जा सकता है:

जोन A: समीपवर्ती पेटी (Core Zone: 0 से 2 किमी.)

भौगोलिक स्थिति: यह क्षेत्र राष्ट्रीय राजमार्गों (जैसे NH–19, NH–20) या जिला मुख्य सड़कों के बिल्कुल करीब स्थित है। हजारीबाग और रामगढ़ के शहरी बाहरी इलाके इसके उदाहरण हैं।

प्रभाव: यहाँ दूरी न्यूनतम है, इसलिए सुविधाओं का लाभ अधिकतम है। यहाँ की जनजातियों (जैसे मुंडा, संथाल) के पास एम्बुलेंस, स्कूल बस और सीधे बाजारों तक पहुंच है। यहाँ दूरी–प्रभाव मॉडल का प्रभाव नगण्य है।

जोन B: मध्यम सुदूर पेटी (Bffuer Zone: 2 से 5 किमी.)

भौगोलिक स्थिति: मुख्य पक्की सड़कों से अंदर की ओर जाने वाले ग्रामीण संपर्क मार्ग (काली सड़क)। गिरिडीह के डुमरी और बोकारो के कुछ ग्रामीण इलाके इसके उदाहरण हैं।

प्रभाव: यहाँ दूरी बढ़ने के साथ ही सुविधाओं का ह्रास दिखने लगता है। जनजातीय आबादी को अस्पताल या माध्यमिक स्कूल जाने के लिए साइकिल या पैदल 3–4 किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ती है। परिवहन का कोई स्थायी सरकारी साधन न होने से समय और लागत बढ़ जाती है।

जोन C: अति सुदूर डार्क जोन (Peripheral Zone: 5 किमी. से अधिक)

भौगोलिक स्थिति: चतरा के सुदूर वन क्षेत्र (जैसे लावालौंग, कुंदा के आंतरिक भाग) और गिरिडीह के पीरटाँड़ की पहाड़ियों पर बसे ''बिरहोर टाँड'' (आदिम जनजातीय बस्तियां)।

प्रभाव: यहाँ ''दूरी–प्रभाव'' मॉडल अपने चरम सीमा पर है। मुख्य सड़क से 5 किलोमीटर घने जंगलों या पहाड़ी ढालों के बीच होने के कारण आधुनिक सभ्यता का प्रभाव शून्य के करीब पहुंच जाता है।

प्रमुख जनजातियाँ और उनके विशिष्ट निवास क्षेत्र

संथाल (Santhal): यह इस प्रमंडल की सबसे बड़ी जनजातीय आबादी है। यह मुख्य रूप से गिरिडीह, बोकारो और धनबाद के उन हिस्सों में पाई जाती है जो संथाल परगना की सीमा से सटे हैं। इनके गांव (आमतौर पर ''ओलाह'') घने जंगलों, नदियों और पहाड़ों की तलहटी के समीप प्राकृतिक रूप से बसे होते हैं। इनके घर बांस, मिट्टी, खपड़े और स्थानीय प्राकृतिक सामग्रियों से बनाए जाते हैं। दीवारों पर प्राकृतिक रंगों (गेरू, सफेद, काला) से सुंदर चित्रकारी की जाती है, जो इनकी कला और प्रकृति प्रेम को दर्शाती है।

आवागमन के लिए पैदल चलना, साइकिल का उपयोग और बैलों से चलने वाली गाड़ियों (बैलगाड़ी) का प्रमुख रूप से चलन रहा है। वर्तमान में जंगलों के कम होने और आधुनिकीकरण के कारण ग्रामीण इलाकों में भी पक्की सड़कें बन रही हैं इसके परिणामस्वरूप आवागमन के लिए मोटरबाइक, स्कूटर, टैक्टर और ऑटो–रिक्शा का उपयोग तेजी से बढ़ा हैं।

मुंडा (Munda) और उरांव (Oraon): मुंडा और उरांव का मूल प्राकृतिक आवास छोटानागपुर के घने जंगल, पहाड़ और नदियां हैं, ये जनजातियाँ मुख्यतः हजारीबाग, रामगढ़ और चतरा के मैदानी व पठारी खंडों में निवास करती हैं। आवागमन के लिए ये मुख्य रूप से पैदल यात्रा और साइकिल पर निर्भर रहे हैं। आधुनिक युग में पक्की सड़कों और बसों का उपयोग बढ़ गया है।

बिरहोर (Birhor): बिरहोर दो शब्दों से मिलकर बना है वीर+होर। वीर का अर्थ है जंगल तथा होर का अर्थ मनुष्य से है अर्थात जंगल का आदमी। बिरहोर का आवास पहाड़ों और जंगलों के एकांत में होता है। उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल में इनका आवास हजारीबाग (जैसे डेमोटांड, टाटीझरिया, विष्णुगढ़, कटकमसांडी के घने जंगलों), चतरा (टंडवा) गिरिडीह और कोडरमा के पहाड़ी तलहटियों में छोटे–छोटे 'टांड' (अस्थाई बस्तियां) में रहते हैं। इनका जीवन पूरी तरह से वन परिवेश पर निर्भर है जैसे खरगोश, हिरण, बंदर तथा अन्य जानवरों का शिकार करने तथा मधु और रस्सी बनाने के काम में आने वाले रस्सी फाइबर जमा करने के लिए घूमते फिरते हैं और इन्हीं जंगलों से प्राप्त उत्पाद एवं तैयार रसिया, मधु तथा मोम बेचा करते हैं।

ST के कार्य और आर्थिक गतिविधियां जिलावार

जिला	जिला कुल श्रमिक	मुख्य श्रमिक	कृषक श्रमिक	कृषि श्रमिक	पारिवारिक उद्योग श्रमिक	अन्य श्रमिक	सीमांत श्रमिक
गिरीडीह	113130	33036	09846	10586	1321	11283	80094
बोकारो	104358	43471	10410	05229	1032	27070	60617
घनबाद	098474	41608	07977	06868	2209	24554	56866
रामगढ़	074082	44167	13446	08364	0855	21502	29915
हजारीबाग	049989	19996	06734	04037	0311	08914	29993
चतरा	019379	08262	04133	02117	0213	01799	11117
कोडरमा	002979	01710	00408	00423	0005	00874	01269

*(**Source:** District Census Handbook 2011)*

उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल में जनजातीय समुदाय की प्रमुख समस्याएं

क. भौगोलिक अलगाव और ''डार्क जोन''

कई जनजातीय बस्तियां (टोले) मुख्य पक्की सड़कों से 5 से 10 किलोमीटर दूर जंगलों के बीच स्थित हैं। मानसून के दिनों में नदियों और नालों पर पुल न होने के कारण ये पूरी तरह ''डार्क जोन'' या संपर्क विहीन क्षेत्र बन जाते हैं। प्रतापपुर और लावालौंग (चतरा); यह इलाका भौगोलिक बनावट और नक्सल प्रभावित होने के कारण मुख्य विकास की मुख्यधारा से काफी कटा हुआ (अलग–थलग) रहा है। पीरटांड़ – पारसनाथ की तलहटी (गिरिडीह); पारसनाथ पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण कई गाँव आज भी सड़क और संचार सुविधाओं से वंचित हैं और अलग–थलग पड़ जाते हैं।

ख. स्वास्थ्य संकट

संस्थागत प्रसव का अभाव: सड़कों के अभाव में एम्बुलेंस (जैसे 108 सेवा) सुदूर गांवों तक नहीं पहुंच पाती। इसके कारण आज भी गर्भवती महिलाओं को खटिया पर लादकर मुख्य सड़क तक लाना पड़ता है, जिससे मातृ और शिशु मृत्यु दर में वृद्धि होती है।

आपातकालीन चिकित्साः समय पर अस्पताल न पहुंच पाने के कारण मलेरिया, सर्पदंश और डायरिया जैसी बीमारियों से मौतें हो जाती हैं। हंडिया खुर्द (Hindia Khurd); यह गाँव चतरा जिले में स्थित है। यहाँ पक्की सड़क न होने के कारण लोगों को आपातकालीन स्थिति में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। परिवहन के अभाव और खराब रास्तों के कारण कई बार मरीजों को समय पर इलाज नहीं मिल पाता। शाहरबेदा (Shaharbeda); बोकारो जिले के चास प्रखंड में स्थित इस गाँव के 300 से अधिक निवासी आज भी मुख्य मार्गों और पुल–पुलियों से वंचित हैं। प्राकृतिक नालों और जंगलों से घिरे होने के कारण स्वास्थ्य संबंधी आपात स्थितियों में यहाँ एंबुलेंस या कोई अन्य वाहन नहीं पहुँच सकता।

डॉक्टर का अभावः सुदूर क्षेत्रों में बनी स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर का अभाव है साथ ही जिनका इन क्षेत्रों में नियुक्ति हो चुका है वह भी परिवहन सुविधाओं के पहुंच के कमी के कारण सप्ताह में एक या दो दिन ही जाते हैं।

ग. शिक्षा में बाधा

स्कूलों की दूरी और कठिन रास्ताः माध्यमिक और उच्च विद्यालय गांवों से बहुत दूर हैं। परिवहन के साधन (बस या ऑटो) न होने के कारण जनजातीय छात्राओं को कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप कक्षा 8 के बाद लड़कियों का ड्रॉप–आउट रेट (Drop-out Rate) अत्यधिक उच्च है। साथ ही इन क्षेत्रों में जिन शिक्षकों की नियुक्ति होती है वह सुविधाओं के अभाव में अपनी तबादला सुविधाओं से परिपूर्ण क्षेत्र में करा लेते हैं जिसके कारण यहां के बच्चों का उचित शिक्षा नहीं मिल पाती है।

घ. आर्थिक शोषण और बाजार तक पहुंच की कमी

परिवहन की सुविधा न होने के कारण आदिवासी किसान अपनी कृषि उपज और वन उपज को बड़े बाजारों या कृषि मंडियों तक नहीं ले जा पाते। इसका फायदा स्थानीय बिचौलिए और महाजन उठाते हैं, जो उनके उत्पादों को औने–पौने दामों पर खरीद लेते हैं, जिसके कारण इन्हें उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो पता है। (Suresh, 2025)।

समस्या समाधान में परिवहन की भूमिका

पारसनाथ पहाड़ी श्रृंखला के तलहटी और ऊंचाइयों पर बसे संथाल गांवों में ढाल (Slope) तीव्र होने के कारण सामान्य परिवहन संभव नहीं है। पूर्व में उग्रवाद की समस्या के कारण भी अंदरूनी क्षेत्रों में सड़क बुनियादी ढांचे का विकास धीमा रहा है। वही प्रतापपुर, कुंदा, लावालौंग प्रखंड का एक बड़ा हिस्सा ''लावालौंग अभयारण्य'' और घने जंगलों से घिरा है। वन संरक्षण अधिनियम (Forest ConservationAct) के कड़े नियमों के कारण सुदूर गांवों तक पक्की सड़कों का निर्माण अत्यंत जटिल हो जाता है, जिससे बिरहोर जैसी जनजातियां अलग–थलग रह गई हैं। परिवहन केवल बुनियादी ढांचा नहीं है, बल्कि यह जनजातीय विकास के लिए एक ''उत्प्रेरक'' की भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से निम्नलिखित समाधान संभव हैं:

1. **प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का सुदृढ़ीकरणः** सुदूरवर्ती जनजातीय टोलों (जैसे बिरहोर) को बारहमासी एकल सड़कों से जोड़ना अनिवार्य है। पहाड़ों और नदियों पर छोटे पुल–पुलिया का निर्माण प्राथमिकता के आधार पर होना चाहिए ताकि मानसून में संपर्क न टूटे।
2. **''आदिवासी स्पेशल'' मिनी बस एवं सार्वजनिक परिवहन सेवाः** सरकारी स्तर पर सुदूर प्रखंड मुख्यालयों से जनजातीय गांवों के लिए रियायती दरों पर मिनी–बस या ''सुलभ ऑटो'' सेवा शुरू की जानी चाहिए। इससे साप्ताहिक हाट–बाजारों तक आदिवासियों की पहुंच आसान होगी और उनका आर्थिक अलगाव समाप्त होगा।
3. **मोबाइल हेल्थ और एजुकेशनल वैनः** जब तक स्थायी सड़कें पूरी तरह नहीं बन जातीं, तब तक विशेष भौगोलिक बनावट वाले क्षेत्रों में ''फोर–व्हीलर ड्राइव'' (4X4) मोबाइल मेडिकल वैन चलाई जानी चाहिए, जो सप्ताह में कम से कम दो बार सुदूर गांवों में जाकर स्वास्थ्य जांच और दवाएं उपलब्ध करा सके।
4. **वन धन विकास केंद्रों का परिवहन नेटवर्क से जुड़ावः** परिवहन व्यवस्था सुधरने से स्थानीय जनजातीय स्वयं सहायता समूह (SHGs) अपने उत्पादों (जैसे पत्तल, शहद, महुआ के उत्पाद) को सीधे हजारीबाग, बोकारो या रांची के बड़े बाजारों तक भेज सकेंगे, जिससे उनकी आय दोगुनी हो सकती है।
5. **पर्यटन स्थलों का परिवहन नेटवर्क से जुड़ावः** इन क्षेत्रों में रमणीय स्थल है जिन्हें परिवहन द्वारा जोडकर पर्यटन स्थल को विकसित कर इनका आर्थिक सुधार किया जा सकता हैं।

निष्कर्ष

उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के सुदूर जनजातीय क्षेत्रों के भौगोलिक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यहाँ की अधिकांश सामाजिक–आर्थिक समस्याओं की जड़ में भौगोलिक दूरी और गतिशीलता (Mobility) का अभाव है। परिवहन तंत्र का विकास करके न केवल इन क्षेत्रों का आर्थिक पिछड़ापन दूर किया जा सकता है, बल्कि आदिवासियों को स्वास्थ्य और शिक्षा के बुनियादी अधिकार भी दिए जा सकते हैं। अतः, जनजातीय उप–योजना (Tribal Sub-Plan) के तहत सड़क और परिवहन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए ताकि ''अंत्योदय'' (लाइन में खड़े अंतिम व्यक्ति का विकास) की परिकल्पना साकार हो सके (Bashir, 2025)।

संदर्भ सूची

1. सिंह, एस के (2018) *झारखंड प्रदेश की भौगोलिक व्याख्या.* राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. सिंह, कामेश्वर नाथ (2003) *परिवहन भूगोल.* ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर।
3. वैष्णव, अखिलेश (2024) *परिवहन भूगोल.* राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
4. सिंह, जगदीश (1977) *परिवहन एवं व्यापार भूगोल,* उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
5. भारत सरकार एवं झारखंड सरकार (2011) जिला जनगणना हस्तपुस्तिका, हजारीबाग, चतरा, गिरिडीह. जनगणना कार्य निदेशालय, हजारीबाग।
6. झारखंड संरकार (2011) *जिला जनगणना हस्तपुस्तिकाः उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल.* जनगणना कार्य निदेशालय, हजारीबाग।
7. https://hazaribag.nic.in/ncd/, Accessed on 10/06/2026.

****